नेपाल, वल्लभी, मालवा, सिन्ध और काश्मीर उसके राज्य में सम्मिलित नहीं थे। आसाम और वल्लभी के नरेश हर्ष के मित्र थे, उसके सामन्त नहीं। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि सम्राट हर्ष तत्कालीन उत्तरी भारत का सबसे महान् और प्रभावशाली शासक था।

हर्ष का शासन-प्रबन्ध

सम्राट हर्ष के शासन-प्रबन्ध के बारे में हमें काफी विस्तार के साथ जानकारी मिलती है। खुद उसके ताम्रलेखों, ह्वेनसाँग के यात्रा-विवरण तथा अन्य साक्ष्यों द्वारा हर्ष की शासन-व्यवस्था पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है। जिनके आधार पर निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत इसका अध्ययन किया जा सकता है।

केन्द्रीय शासन, सम्राट

हर्ष ने अपनी शासन-व्यवस्था का आधार गुप्त शासन प्रणाली को ही बनाया था किन्तु उसने अपनी मौलिक सूझ-बूझ का परिचय दिया था। वह शासन-व्यवस्था का अध्यक्ष था, इसलिए सबसे अधिक परिश्रम करना वह अपना कर्त्तव्य समझता था। ह्वेनसाँग ने लिखा है कि "शीलादित्य सम्राट हर्ष इतने अथक परिश्रमी हैं कि दिन का सारा समय भी उनके लिये पर्याप्त नहीं होता।" हर्ष की एक विशेषता यह थी कि वह अपने राज्य में शासन यात्रायें किया करता था जिससे वह जनता के निकट सम्पर्क में आये और उनके दुख-दर्द को जान कर उसे दूर करने की कोशिश करे। शासन-व्यवस्था के सभी अंगों—प्रशासन, सैन्य संगठन तथा न्याय-विधान का वही अध्यक्ष था। उच्च कर्मचारियों की नियुक्ति का दायित्व उसी के ऊपर था और युद्ध में सेना का संचालन तथा नेतृत्व भी वही करता था। न्याय विभाग का वह सर्वोच्च न्यायाधीश था। इस प्रकार सम्राट का न्यायालय अपील का अन्तिम न्यायालय होता था।

मन्त्रिमण्डल और शासन विभाग

शासन-कार्यों में सम्राट को सहायता देने के लिए एक मन्त्रि-परिषद् थी और प्रत्येक मन्त्री केन्द्रीय सरकार के एक या एक से अधिक विभाग का अध्यक्ष होता था। मन्त्रियों का काम यों तो सम्राट को परामर्श देना था किन्तु अपने विभाग के सम्बन्ध में उन्हें महत्वपूर्ण निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त था। किसी भी विषय पर अन्तिम निर्णय सम्राट ही ले सकता था। 'हर्षचरित' तथा अभिलेखों में पदाधिकारियों के नाम इस प्रकार दिये गये हैं—(१) महासन्धिविग्रहाधिकृत—युद्ध और शान्ति का मन्त्री, (२) महाबलाधिकृत—सेना का सबसे प्रधान कर्मचारी, (३) बृहदश्वार—अश्व सेना का प्रधान, (४) कटुक—गज सेनाध्यक्ष, (५) राजस्थानीय—पर-राष्ट्रमन्त्री, (६) महाप्रतीहार—राजमहल का शासक और रक्षक तथा (७) मीमांसक—न्यायाधीश। सार्वजनिक महत्व रखने वाली घटनाओं को लेखबद्ध करने के लिये अलग से कर्मचारियों की नियुक्ति की जाती थी और इस कर्मचारी के लिए 'अक्षपटलिक' शब्द का प्रयोग किया गया है। साधारण क्लर्क के लिये करणिक शब्द प्रयोग होता था।

प्रान्तीय शासन

सुविधा और सुशासन की दृष्टि से सम्पूर्ण साम्राज्य को प्रान्तों में विभक्त कर दिया गया था जिन्हें "भुक्ति" अथवा "प्रदेश" कहते थे। कौशाम्बी, श्रावस्ती तथा अहिच्छत्र आदि कुछ प्रान्तों के नाम बराबर आये हैं। प्रान्तीय शासन की

कन्नौज के मन्त्रियों ने कन्नौज का राज्य भी हर्ष को सौंप दिया। इस प्रकार थानेश्वर व कन्नौज के दो प्रमुख राज्य मिलकर एक हो गये। शासन की सुविधा के लिये हर्ष ने कन्नौज के नगर को अपनी राजधानी बनाया।

प्रारंभिक कठिनाइयों से छुट्टी पाकर हर्ष ने साम्राज्य-विस्तार की ओर ध्यान दिया। उसने अनेक राज्यों को जीता, पर उसकी इन विजयों का चित्र अस्पष्ट है। हर्ष की विजयों के बारे मे न तो बाण के विवरण से स्पष्ट जानकारी मिलती है और न ही युवान च्वांग स्पष्ट शब्दों में उनका उल्लेख करता है। चीनी यात्री लिखता है कि हर्ष ने गद्दी पर बैठते ही छः वर्षों तक निरन्तर युद्ध किया और "पाँचों भारतों को अपने अधिकार में कर लिया। परन्तु उसने यह नहीं लिखा कि हर्ष ने किन राज्यों को जीता और उन्हें कब जीता। उसकी कुछ विजयें निम्नलिखित थीं :—

(१) शशांक पर विजय

हर्षचरित से पता लगता है कि गद्दी पर बैठते ही हर्ष शशांक को दण्ड देने के लिए निकल पड़ा था। परन्तु ऐसा लगता है कि ६१९ ई० तक हर्ष गौड़ नरेश का कुछ नहीं बिगाड़ सका। कुछ विद्वानों का विचार है कि हर्ष और शशांक में युद्ध हुआ ही नहीं। सम्भवतः शशांक की मृत्यु के पश्चात् हर्ष ने गौड़ तथा उड़ीसा को अपने अधिकार में किया था।

(२) वल्लभी पर आक्रमण

हर्ष ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को युद्ध में पराजित किया। दोनों में सन्धि हो गई। ध्रुवसेन ने हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली। हर्ष ने अपनी बेटी का विवाह उसके साथ कर दिया।

(३) पुलकेशिन से युद्ध

नर्मदा नदी के दक्षिण में चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का शक्तिशाली राज्य था। उत्तरी भारत जीतने के पश्चात् हर्ष ने चालुक्य नरेश पर हमला कर दिया। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में हर्ष की हार हुई। पुलकेशिन की इस महत्वपूर्ण विजय का उल्लेख उसके एहोल अभिलेख में मिलता है।

(४) अन्य विजय

इनके अतिरिक्त हर्ष ने और राज्यों को भी जीता था परन्तु उनका विवरण उपलब्ध नहीं है। कुछ विद्वानों का विचार है कि हर्ष ने काश्मीर, सिन्ध व नेपाल के राजाओं को भी परास्त किया था और इन्होंने हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली थी। परन्तु इस विचार के लिए हमारे पास कोई ठोस एवं पक्का प्रमाण नहीं है।

साम्राज्य-विस्तार

हर्षवर्धन का साम्राज्य बहुत बड़ा था। समस्त उत्तरी भारत में उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा का सिक्का जमा हुआ था और वल्लभी के मैत्रक राजा ध्रुवसेन द्वितीय तथा आसाम के राजा भास्करवर्मन ने उसकी राजसभा में उपस्थित होकर उसके प्रति आदर प्रदर्शित किया था, तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि हर्षवर्धन सम्पूर्ण उत्तरी भारत का स्वामी था। हर्ष के साम्राज्य में पूर्वी पंजाब के कुछ प्रदेश, लगभग सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश, बिहार, मगध, बंगाल तथा गंजाम के साथ उड़ीसा आदि भाग सम्मिलित थे। दक्षिण में नर्मदा नदी उसके राज्य की सीमा थी। आसाम,